Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया:

तीसरा मसीहाई चमत्कार

युहन्ना ९:१-४१

खुदाई: प्रेरितों ने इस आदमी के अंधेपन के बारे में क्या धारणाएँ बनाईं? यीशु ने कौन सी ग़लतफ़हमी दूर की? येशुआ ने अंधे व्यक्ति को उपचार प्रक्रिया में कैसे शामिल किया? आपको क्या लगता है प्रभु ने उस आदमी को ठीक करने से पहले उसे तालाब में नहाने के लिए क्यों भेजा? उसके पड़ोसियों ने चमत्कार पर क्या प्रतिक्रिया दी? हम मसीहा के महत्व के बारे में उनकी प्रगतिशील समझ को कैसे देख सकते हैं? फरीसी उसके माता-पिता से पूछताछ करने के लिए इतने बेचैन क्यों थे? यहूदी धर्म में बहिष्कार की तीन डिग्री क्या हैं? तीन मसीहाई चमत्कारों के प्रति फ़रीसी यहूदी धर्म की प्रतिक्रिया कैसे बनी?

चिंतन: कौन सी शारीरिक या भावनात्मक बाधा (सीखने की अक्षमता, असफल रिश्ते, पुरानी बीमारी) एडोनाई के लिए अपनी शक्ति प्रदर्शित करने का अवसर बन गई है? या क्या आप अपने दुखों को बर्बाद करते हैं? इस परिच्छेद से आपको जीवन के संघर्षों के बारे में कौन सी ताज़ा जानकारी प्राप्त हुई है? आपको अपनी व्यक्तिगत कमजोरियों और शक्तियों के प्रति अपना दृष्टिकोण कैसे बदलने की आवश्यकता है? परमेश्वर अपनी महिमा के लिए हमारी कमज़ोरियों और समस्याओं का उपयोग क्यों करना चाहता है? आपके लिए अपने विश्वास को समझाना सबसे कठिन व्यक्ति कौन रहा है? क्यों? जो लोग मसीह में आपके विश्वास का उपहास करते हैं, उनसे निपटने में आपने क्या सबसे अधिक उपयोगी पाया है? क्या यीशु में आपके विश्वास के कारण आपको किसी समूह से बाहर कर दिया गया है? इससे आपको किस प्रकार हानि या सहायता मिली है?

सुसमाचार तथ्यों का निष्फल समूह नहीं है; यह वह साधन है जिसके द्वारा एडोनाई पापियों को पाप की गुलामी से छुड़ाता है (रोमियों १:१६)। यह केवल बौद्धिक सहमति के लिए नहीं, बल्कि हृदय, आत्मा, दिमाग और शक्ति के पूर्ण समर्पण के लिए कहता है (मरकुस १२:३०)। इसका काम बुतपरस्तों से धर्मशास्त्रियों को तैयार करना नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक रूप से अंधों की आंखें खोलना है। जन्म से अंधे व्यक्ति की कहानी एक स्पष्ट मामला है ।

जन्म से अंधे एक व्यक्ति के चमत्कारी उपचार को लेकर यीशु और फरीसियों के बीच संघर्ष स्पष्ट रूप से दोपहर तक जारी रहा। यह बूथों के त्योहार के आठवें दिन जारी रहा (लैव्यव्यवस्था २३:३६, ३९; गिनती २९:३५)। यह वास्तव में एक अलग दावत का दिन

Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 2

माना जाता था। इस दावत को रब्बीनिक हिब्रू में शेमिनी ‘अत्ज़ेरेट’ कहा जाता है, जिसका लगभग मतलब आठवें (दिन) की उत्सव सभा है। यह टेम्पल माउंट पर बिना किसी नियमित कार्य के सब्त के विश्राम के साथ मनाया जाता था।

यीशु ने अभी-अभी देवता होने का दावा करते हुए कहा था: इब्राहीम के जन्म से पहले, मैं हूँ! इस पर धार्मिक नेता क्रोधित हो गए और उन्होंने उन्हें पत्थर मारने के लिए पत्थर उठा लिए। लेकिन भ्रम की स्थिति में, मसीह फिसल गया और उन लोगों के बीच में चला गया जो भीड़ में उसके दोस्त थे और चुपचाप, लेकिन साहसपूर्वक, मंदिर के मैदान से बाहर चले गए (यूहन्ना ८:५८-५९)। जैसे ही यीशु चले गए, उन्होंने एक आदमी को जन्म से अंधा देखा (यूहन्ना ९:१)। उनका अंधापन एक जन्म दोष था, कोई अस्थायी पीड़ा नहीं जिससे वह उबरने की उम्मीद कर सकते थे – बिल्कुल मानव जाति के पाप की तरह। तनाख या प्रेरितों की पुस्तक में अंधों का कोई उपचार नहीं था। यह व्यक्ति इस बात की गवाही के रूप में खड़ा था कि येशुआ वास्तव में दुनिया की रोशनी थी (योचनान ८:१२ए)। प्राचीन यहूदिया में, विकलांग लोग आमतौर पर मंदिर की ओर जाने वाली अच्छी तरह से यात्रा वाली सड़क पर स्थानों का दावा करते थे। जबकि जन्म से अंधा व्यक्ति निस्संदेह उस दिन कई अन्य लोगों में शामिल हो गया, उसने शिष्यों का ध्यान आकर्षित किया, शायद इसलिए क्योंकि उसकी स्थिति चोट की बीमारी के परिणामस्वरूप होने के बजाय संभवतः जन्मजात थी। उसके अंधेपन ने उनकी जिज्ञासा जगा दी।

उसके प्रेरितों ने मसीहा से एक दिलचस्प धार्मिक प्रश्न पूछा, “रब्बी, किसने पाप किया था, इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने, कि वह अंधा पैदा हुआ (यूहन्ना ९:२)?” किसने इतना भयानक पाप किया कि यह आदमी अंधा पैदा हुआ? प्रश्न में विचित्रता यह नहीं थी कि क्या इस व्यक्ति के माता-पिता ने पाप किया था और परिणामस्वरूप वह अंधा पैदा हुआ था। निर्गमन ३४:६-७ में टोरा का एक सिद्धांत है कि यहोवा माता-पिता के पापों का दण्ड बच्चों और बच्चों के बच्चों पर तीसरी और चौथी पीढ़ी तक देते हैं। यह कल्पना की जा सकती है कि माता-पिता ने एक विशिष्ट पाप किया था और परमेश्वर ने उनके बेटे पर उस पाप का प्रतिकार किया; इसलिए, बेटा अंधा पैदा हुआ था. लेकिन यह सवाल का अजीब हिस्सा नहीं था। उन्होंने यह भी पूछा: या क्या इसी मनुष्य ने पाप किया, और अंधा जन्मा? इस तथ्य के प्रकाश में कि यहूदी धर्म पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता था, उसने पहले पाप कैसे किया और फिर अंधा पैदा हुआ?

शिष्यों द्वारा पूछा गया प्रश्न वास्तव में उस संस्कृति को दर्शाता है जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ था। फ़रीसी यहूदी धर्म के अनुसार, जन्म दोष, जैसे अंधा पैदा होना, एक विशिष्ट पाप के कारण होता है, जो या तो माता-पिता द्वारा किया जाता है या किसी व्यक्ति द्वारा किया जाता है। लेकिन फिर, कोई व्यक्ति पहले पाप कैसे कर सकता है और फिर अंधा पैदा हो सकता है? फ़रीसी यहूदी धर्म के अनुसार, गर्भाधान के समय, भ्रूण के दो झुकाव होते हैं। हिब्रू में उन्हें येत्ज़र हारा और येत्ज़र हातोव कहा जाता है, जिसका अर्थ है बुरी प्रवृत्ति (पाप स्वभाव से भ्रमित न होना)

Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 3

और अच्छी प्रवृत्ति। ये दो प्रवृत्तियाँ पहले से ही गर्भ में पल रहे नए इंसान के भीतर मौजूद होती हैं। मां के गर्भ में नौ महीने के विकास के दौरान दोनों प्रवृत्तियों के बीच नियंत्रण के लिए संघर्ष चलता रहता है। और रब्बियों का कहना था कि ऐसा हुआ होगा कि एक बिंदु पर दुष्ट प्रवृत्ति भ्रूण पर हावी हो गई और उसने अपनी माँ के प्रति शत्रुता या क्रोध की स्थिति में, उसे गर्भ में ही लात मार दी। पाप के इस कृत्य के लिए वह अंधा पैदा हुआ था। इसलिए, बारह का प्रश्न वास्तव में उस संस्कृति को दर्शाता है जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ था। सो उन्होंने पूछा, इस मनुष्य ने या इसके माता-पिता ने क्या पाप किया, कि यह अन्धा पैदा हुआ?

प्रेरित दो भ्रांतियों के दोषी थे। पहली भ्रांति फरीसी शिक्षा को स्वीकार करना था कि बच्चा माँ के गर्भ में पाप कर सकता है और फिर भी अंधा पैदा हो सकता है। दूसरी भ्रांति यह है कि जन्म दोष, जैसे अंधा पैदा होना, किसी विशिष्ट, भयानक पाप के कारण होता है। येशुआ ने उस विचार को बहुत जल्दी दूर कर दिया। मसीह ने कहा, न तो इस आदमी ने और न ही इसके माता-पिता ने पाप किया, बल्कि यह इसलिए हुआ ताकि परमेश्वर का कार्य उसके जीवन में प्रदर्शित हो सके। दूसरे शब्दों में, वह अपने माता-पिता या स्वयं द्वारा किए गए किसी विशिष्ट पाप के कारण अंधा पैदा हुआ था। सभी शारीरिक समस्याएँ आदम के पतन के कारण हैं और पाप और गिरी हुई मानवता की सामान्य समस्या का परिणाम हैं। लोग मरते हैं क्योंकि वे आदम के वंशज हैं। हालाँकि, यह कहना कि एक विशिष्ट जन्म दोष, बीमारी, बीमारी या चोट हमेशा किसी विशेष पाप या राक्षस के कारण होती है, एक गलत शिक्षा है। यीशु ने यह कहकर इस शिक्षा को स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया कि इस आदमी ने पाप नहीं किया, न ही उसके माता-पिता ने। इसके विपरीत, परमेश्वर ने इस व्यक्ति को अंधा पैदा करने की व्यवस्था की ताकि वह एक महान कार्य पूरा करके अधिक महिमा प्राप्त कर सके।

पापियों के उद्धारकर्ता ने, पाप और पीड़ा के संबंध पर एक लंबी धार्मिक चर्चा से बचते हुए, सरलता से उत्तर दिया: यीशु ने कहा, न तो इस व्यक्ति ने और न ही इसके माता-पिता ने पाप किया, बल्कि यह इसलिए हुआ ताकि ईश्वर के कार्य उसमें प्रदर्शित हो सकें। जब तक दिन है, हमें उसके काम करते रहना चाहिए जिसने मुझे भेजा है। रात आ रही है, जब कोई काम नहीं कर सकेगा (योचनन ९:३-४)। पीड़ित नौकर को कुछ ही महीनों में सूली पर चढ़ा दिया जाएगा। भारी धार्मिक तुच्छ बातों का समय बहुत पहले बीत चुका था। अब क्रियाएं शब्दों से अधिक जोर से बोलती हैं। यह अंधा आदमी एक चमत्कार होने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे समस्त अनंत काल से केवल इसी क्षण के लिए चुना गया था ताकि परमेश्वर का पुत्र अपनी महिमा प्रकट कर सके।

Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 4



जैसे ही यीशु ने अपने शिष्यों के दोषपूर्ण
धर्मशास्त्र को सुधारना समाप्त किया, उन्होंने घोषणा की: जबकि मैं दुनिया में हूं, मैं दुनिया की रोशनी हूं। फिर वह उपचार के लिए आगे बढ़ा। उसने उस आदमी को इस तरह से ठीक करना चुना कि यह कुछ हद तक एक प्रक्रिया थी और इस बिंदु पर, उस आदमी को कभी भी गुरु को देखने का मौका नहीं मिला। बिना कुछ कहे यीशु ने भूमि पर थूका, उस थूक से थोड़ी मिट्टी बनाई, और उस मनुष्य की आंखों पर लगा दी (यूहन्ना ९:५-६)। इस एक कार्य में, येशुआ ने विकलांगताओं, पाप, बुरे धर्मशास्त्र, धर्म, मंदिर, सब्बाथ और यहां तक कि उसका विरोध करने वाले धार्मिक अधिकारियों पर भी अपना अधिकार जताया।

जाओ, यीशु ने उससे कहा: सिलोम के तालाब में अपनी आंखों से कीचड़ धो लो (इस शब्द का अर्थ है “भेजा हुआ”)। यरूशलेम का प्राचीन शहर एक पहाड़ पर होने के कारण, प्राकृतिक रूप से लगभग सभी तरफ से सुरक्षित है, लेकिन इसमें एक खामी है कि इसका ताजे पानी का प्रमुख स्रोत, गिहोन झरना, किड्रोन घाटी की ओर देखने वाली चट्टान के किनारे पर है। यह शहर की दीवारों के रूप में एक बड़ी सैन्य कमजोरी प्रस्तुत करता है, यदि रक्षात्मक होने के लिए पर्याप्त ऊंची है, तो आवश्यक रूप से गिहोन झरने को बाहर छोड़ना होगा, इस प्रकार घेराबंदी के मामले में शहर को ताजे पानी की आपूर्ति के बिना छोड़ दिया जाएगा। लगभग ७०० ईसा पूर्व राजा हिजकिय्याह (२ राजा २०:२०; २ इतिहास ३२:३०), इस डर से कि असीरियन शहर की घेराबंदी कर देंगे, उसने शहर के बाहर झरने के पानी को रोक दिया और इसे १,७०० फुट की सुरंग के माध्यम से तत्कालीन पूल में बदल दिया सिलोम.

किसी चीज़ ने, संभवतः येशुआ की आवाज़ में अधिकार ने, उसे आज्ञा मानने के लिए मजबूर किया। बूथों के त्योहार के साथ एक संबंध यहां स्पष्ट रूप से देखा जाता है। उत्सव के सात दिनों में से प्रत्येक दिन एक विशेष अनुष्ठान होता था जिसे पानी डालना कहा जाता था। इस अनुष्ठान में, पुजारी टेंपल माउंट से सिलोम के पूल (देखें Ne – सिलोम का पूल) तक सड़क पर मार्च करते थे, अपने जगों में पानी भरते थे और वापस ऊपर जाते थे और पानी को पीतल के बेसिन में डालते थे। मंदिर के मैदान (निर्गमन Fh पर मेरी टिप्पणी देखें – तम्बू में कांस्य बेसिन: मसीह, हमारा शुद्ध करने वाला)। इसके बाद बड़ा आनन्द मनाया गया। बूथों के त्योहार के दौरान, सिलोम का पूल यहूदियों के ध्यान का केंद्र था। इसमें सबसे बड़ी संख्या में लोग मौजूद होंगे जो

Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 5

इस तीसरे मसीहाई चमत्कार को देखेंगे। यह बिल्कुल इसी मार्ग पर था कि प्रभु की आज्ञा को पूरा करने के लिए मनुष्य को अपना रास्ता खुद ही महसूस करना था। तब वह पुरूष जाकर नहाया, और देखता हुआ घर आया। (यूहन्ना ९:७) यह युहन्ना की पुस्तक में यीशु के सात चमत्कारों में से छठा है (योचनान २:१-११; ४:४६-५४; ५:१-१५; ६:१-१५; ६:१६-२१; ११:१-४४) । आज्ञाकारिता के इस कार्य के माध्यम से, यीशु ने मनुष्य की भौतिक आँखें खोल दीं। इसलिए, उन्होंने मसीहा के प्रति प्रतिक्रिया का एक पैटर्न शुरू किया जो विश्वास को बचाने में परिणत होगा।

वह आदमी सिलोम के तालाब के पास गया, और अपनी
आँखें धोई, और जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो अपने पूरे जीवन में पहली बार वह देखने में सक्षम हुआ। चूँकि हर कोई इस आदमी को जानता था और जानता था कि वह अंधा पैदा हुआ था, इससे काफी हलचल मच गई। उसके पड़ोसियों और जिन्होंने पहले उसे भीख माँगते देखा था, उन्होंने पूछा, “क्या यह वही आदमी नहीं है जो बैठकर भीख माँगता था?” कुछ लोगों ने दावा किया कि वह था। दूसरों ने कहा, “नहीं, वह केवल उसके जैसा दिखता है।” कई पड़ोसी भ्रमित हो गए क्योंकि उन्होंने पहचान लिया कि यह वही आदमी है, लेकिन दूसरों को यह विश्वास करने में कठिनाई हो रही थी कि जो आदमी अंधा पैदा हुआ था वह ठीक हो गया है। आख़िरकार बहस ख़त्म करते हुए उन्होंने कहा: मैं ही आदमी हूं। फिर उन्होंने मुख्य प्रश्न पूछा: फिर आपकी आँखें कैसे खुलीं (आखिरकार, यह एक मसीहाई चमत्कार है)? उसने उत्तर दिया: जिस आदमी को वे यीशु कहते हैं उसने कुछ मिट्टी बनाई और मेरी आँखों पर डाल दी। उसने मुझे सिलोम में जाकर धोने को कहा। तो मैं गया और धोया, और तब मैं देख सका। उन्होंने उससे पूछा, “यह आदमी कहाँ है?” उसने कहा: मैं नहीं जानता (यूहन्ना ९:८-१२)। लेकिन उसके लिए उत्साहित होने के बजाय, उन्होंने उसे जांच में घसीट लिया।

क्योंकि यह एक मसीहाई चमत्कार था, उस व्यक्ति को फरीसियों के पास ले जाया गया और पहली बार पूछताछ की गई। बूथों के त्योहार के आठवें दिन को सब्बाथ विश्राम दिवस के रूप में मनाया जाता था, परिणामस्वरूप, चमत्कार ने जनता में हलचल पैदा कर दी। पड़ोसी उस आदमी को जो जन्म से अंधा था, फरीसियों के पास ले आये। अब जिस दिन यीशु ने मिट्टी बनाई और उस आदमी की आँखें खोलीं वह सब्त का दिन था (कोई लेख नहीं)। इससे पता चलता है कि यह विशेष रूप से सब्त के दिन नहीं था, बल्कि बूथों के त्योहार का आठवां दिन था जिसे सब्त के विश्राम के रूप में मनाया जाता था। अत: फरीसियों ने

Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 6

भी उस व्यक्ति से पूछा कि उसे दृष्टि कैसे प्राप्त हुई। उसने मेरी आँखों पर मिट्टी डाल दी, उसने उत्तर दिया: और मैंने धोया, और अब मैं देखता हूँ। अचानक चीजें ख़राब हो गईं। कुछ फरीसियों ने कहा: यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं है, क्योंकि वह विश्रामदिन का पालन नहीं करता (योचनान ९:१३-१६ए)। भवन निर्माण उनतीस प्रकार के कार्यों में से एक है जो शब्बत से मिशनाह शब्बत ७:२ तक निषिद्ध है। साथ ही मिश्ना शब्बत का कहना है कि शब्बात पर “जानवरों के चोकर में पानी डालने की अनुमति है”, “लेकिन उन्हें इसे गूंधना होगा।” मिट्टी बनाने के लिए इसे गूंधने की आवश्यकता होती है, और मिट्टी एक निर्माण सामग्री है; इसलिए उन्होंने दावा किया कि शबात के दो उल्लंघन थे, निर्माण और सानना।

परन्तु दूसरों ने पूछा, “एक पापी ऐसे चिन्ह कैसे दिखा सकता है?” अतः वे विभाजित हो गये। फिर वे फिर अंधे आदमी की ओर मुड़े, “तुम्हें उसके बारे में क्या कहना है? उसने तुम्हारी आँखें खोलीं।” यह एक चुनौती थी, ईमानदार सवाल नहीं। धार्मिक रूप से अनभिज्ञ होने के कारण, यह व्यक्ति महान महासभा के सदस्यों से भयभीत होने वाला नहीं था। जन्म से अंधे व्यक्ति ने उत्तर दिया, “वह भविष्यद्वक्ता है” (यूहन्ना ९:१६-१७)।

यीशु के महत्व के बारे में उस व्यक्ति की प्रगतिशील समझ को देखना दिलचस्प है। वह उसे एक मनुष्य (यूहन्ना ९:११) के रूप में सोचने से लेकर उसे एक भविष्यवक्ता के रूप में देखने (यहां) तक जाता है। फिर वह उस व्यक्ति के विचार की ओर आगे बढ़ता है जिसके प्रति निष्ठा उचित रूप से दी जा सकती है (यूहन्ना ९:२७), फिर परमेश्वर की ओर से किसी के प्रति (युहन्ना ९:३३), और अंत में वह मनुष्य के पुत्र पर विश्वास करता है जिसकी पूजा की जानी चाहिए दिया गया (यूहन्ना ९:३७-३८)। इसके विपरीत, फरीसियों ने, इस दृष्टिकोण से शुरुआत करते हुए कि नाज़रीन ईश्वर से नहीं है (युहन्ना ९:१६), चमत्कार पर सवाल उठाते हैं (युहन्ना ९:१८), गैलीलियन रब्बी को पापी के रूप में बोलते हैं (योचनान ९:२४), दिखाया गया है अज्ञानी होना (यूहन्ना ९:२९) और अंततः अंधे पापी करार दिया जाता है (युहन्ना ९:४१)।

जोर पर ध्यान दें, न केवल चिन्ह पर (क्योंकि झूठे भविष्यवक्ता चमत्कार भी कर सकते हैं), बल्कि ऐसे चिन्ह, इन विशेष चिन्ह पर भी। . . ये विशेष मसीहाई चमत्कार। जब फरीसियों ने उस आदमी से पूछा जो अंधा पैदा हुआ था और अब अपने अंधेपन से ठीक हो गया है तो यीशु के बारे में उसकी क्या राय है, उस आदमी ने बस यह निष्कर्ष निकाला कि कम से कम चंगा करने वाला एक भविष्यवक्ता था। हालाँकि, फरीसी शिक्षा के अनुसार, हालांकि एक भविष्यवक्ता चमत्कार करने में सक्षम हो सकता है (जैसे एलिय्याह और एलीशा ने निश्चित रूप से किया था), एक मसीहाई चमत्कार करना किसी भविष्यवक्ता का विशेषाधिकार नहीं था, बल्कि अकेले मसीहा का विशेषाधिकार था। इसलिए उस आदमी से पहली पूछताछ में कोई खास निष्कर्ष नहीं निकला।

महान महासभा (देखें Lg– महान महासभा) ने पहले ही येशुआ को मसीहा के रूप में

Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 7

अस्वीकार कर दिया था (देखें Eh – यीशु को महासभा द्वारा आधिकारिक तौर पर अस्वीकार कर दिया गया है), और सभी इज़राइल जानते थे कि किसी जन्मजात अंधे का उपचार एक मसीहाई चमत्कार था। फरीसियों ने स्वयं यह सिखाया था। इसलिए यहूदी धार्मिक नेता इस “चमत्कार” को झूठा साबित करने के लिए, और मेरा मतलब है, बेताब थे और उम्मीद कर रहे थे कि माता-पिता की भागीदारी से पता चल जाएगा कि उपचार एक धोखा था। इसलिए आगे माता-पिता से पूछताछ की गई।

फरीसियों को अब भी विश्वास नहीं हुआ कि वह अंधा था और उसने अपनी दृष्टि प्राप्त कर ली है, इसलिए उन्होंने उस व्यक्ति के माता-पिता को बुलाया। “क्या यह आपका बेटा है?” उन्होंने पूछा। “क्या यह वही है जिसके बारे में आप कहते हैं कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब वह कैसे देख सकता है?” उन्होंने भिन्न उत्तर की आशा में वही प्रश्न बार-बार पूछे। फरीसियों का डर और धमकी का अभियान इस समय तक सर्वविदित था, इसलिए माता-पिता केवल तथ्यों के अलावा और कुछ नहीं दे सकते थे। “हम जानते हैं कि वह हमारा बेटा है,” माता-पिता ने उत्तर दिया, “और हम जानते हैं कि वह अंधा पैदा हुआ था। लेकिन अब वह कैसे देख सकता है, या उसकी आँखें किसने खोलीं, हम नहीं जानते। उपचारक की पहचान के बारे में अपनी अज्ञानता को स्वीकार करते हुए उन्होंने सशक्त सर्वनाम का उपयोग किया। उससे पूछो। वह उम्र का है; वह आप ही बोलेगा” (योचनान ९:१८-२१)। यह स्पष्ट था कि उन्हें ख़तरे का एहसास था और उनका अपने बेटे के साथ इसमें फंसने का कोई इरादा नहीं था।

माता-पिता ने दो बातों की पुष्टि की। पहला तो यह कि यह आदमी निश्चित ही उनका बेटा था और इसमें कोई संदेह नहीं था। दूसरी बात जो उन्होंने पुष्टि की वह यह थी कि वह अंधा पैदा हुआ था। इसलिए अब कोई संभावना नहीं रह गई थी कि किसी प्रकार की तोड़फोड़ चल रही थी, या कोई फरीसियों के साथ चाल चलने की कोशिश कर रहा था। पूछताछ के दौरान जब उन्होंने माता-पिता से पूछा कि यदि उनका बेटा वास्तव में अंधा पैदा हुआ था तो वह अब कैसे देख पा रहा है, तो उन्होंने और कुछ नहीं कहने का फैसला किया। उसके माता-पिता ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे, क्योंकि यहूदियों ने पहले ही निर्णय कर लिया था कि जो कोई भी यह स्वीकार करेगा कि यीशु ही मसीह है, उसे आराधनालय से बाहर निकाल दिया जाएगा (यूहन्ना ९:२२)। यह पहले ही घोषित कर दिया गया था कि यदि कोई यीशु को मसीहा मानता है, तो उसे बहिष्कृत कर दिया जाएगा, या आराधनालय से बाहर निकाल दिया जाएगा। यह स्पष्ट था कि माता-पिता येशुआ पर विश्वास करना चाहते थे, और शायद इस बिंदु पर वे गुप्त रूप से उस पर विश्वास करने लगे थे, क्योंकि उन्होंने देखा कि उसने न केवल एक मसीहा जैसा चमत्कार किया, बल्कि उस चमत्कार को उनके अपने बेटे पर भी किया।

ग्रीक में यह एक ही शब्द है, अपोसुनागोगोस, शाब्दिक रूप से, असिनगॉग्ड। यहूदी धर्म में बहिष्कार की तीन डिग्री हैं, हालांकि आज कोई भी आम नहीं है। सबसे हल्का, नज़ीफ़ा, जो केवल एक फटकार है, एक व्यक्ति द्वारा घोषित किया जा सकता है और आम तौर पर सात दिनों तक चलता है। हेजीफा का एक उदाहरण प्रथम तीमुथियुस ५:१ में पाया जाता

Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 8

है। अगला, निदुई, जिसका अर्थ है बाहर निकालना, घोषित करने के लिए आमतौर पर तीन रब्बियों की आवश्यकता होती है और यह कम से कम तीस दिनों तक चलेगा और लोगों को अस्वीकृत रब्बियों से छह फीट दूर रहना होगा। इस दूसरे प्रकार का एक उदाहरण दूसरा थिस्सलुनीकियों ३:१४-१५ और तीतुस ३:१० में पाया जाता है। सबसे गंभीर, चेरेम, का अर्थ है विनाश के लिए समर्पित होना। यह अनिश्चित काल का प्रतिबंध था और इसका मतलब था कि उस व्यक्ति को मंदिर से बाहर कर दिया जाएगा। बाकी यहूदी समुदाय केरेम फैसले के तहत किसी को मृत मानते थे और उस व्यक्ति के साथ कोई संचार या किसी भी तरह का रिश्ता नहीं रखा जा सकता था (तलमुद में मोएड कटान १६ए-१७ए, एन’डारिम ७बी , पेसाचिम ५२ए देखें)। एक ऐसे परिवार के लिए जो इतना गरीब है कि अपने बेटे को भीख मांगने की इजाजत देता है – दान मांगने से उतना ही बचना था जितना दान देने का अभ्यास करना था – असंबद्ध होना पूरी तरह से आपदा का कारण बनता। यह तीसरा प्रकार प्रथम कुरिन्थियों ५:१-७ और मत्ती १८:१५-२० में पाया जाता है। मसीहाई यहूदियों के लिए आज परिवार और यहूदी समुदाय द्वारा सामाजिक बहिष्कार – जिसके साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा है जैसे कि चेरेम फैसले के तहत – येशुआ को अपना जीवन समर्पित करते समय गिना जा सकता है (मत्तीयाहू १०:३४-३७ और ल्यूक १४:२६ भी देखें)। इसीलिए उसके माता-पिता ने कहा, “वह वयस्क है। . . उससे पूछो” (योचनान ९:२३)।

यह तथ्य कि आराधनालय से बाहर निकाल दिया जाएगा, की अभिव्यक्ति हमें बताती है कि फरीसियों ने उस व्यक्ति के लिए बहिष्कार का कौन सा स्तर चुना था जो यीशु को मसीहा के रूप में विश्वास करेगा। यह तीसरा और सबसे गंभीर स्तर था, चेरेम – मंदिर के जीवन से बाहर कर दिया जाना, और मृत माना जाना। इसलिए फरीसी अब यीशु में यहूदी विश्वासियों को धमकी दे रहे थे कि न केवल फटकार लगाई जाएगी, या केवल अस्थायी रूप से बाहर कर दिया जाएगा, बल्कि स्थायी रूप से बाहर कर दिया जाएगा। चूँकि माता-पिता जानते थे कि फरीसियों ने मसीह में विश्वास के संबंध में क्या आदेश दिया था, इसलिए उन्होंने आगे कोई टिप्पणी नहीं करने का फैसला किया। वे केवल दो बातों की पुष्टि करेंगे: कि वह उनका बेटा था, और वह अंधा पैदा हुआ था। इसलिए, आदमी से पहली पूछताछ की तरह, माता-पिता से पूछताछ भी बेनतीजा समाप्त हो जाती है।

इसके बाद उस व्यक्ति से दोबारा पूछताछ की गई। यह महसूस करते हुए कि माता-पिता से आगे की पूछताछ निरर्थक होगी, फरीसियों ने अपना ध्यान वापस बेटे पर केंद्रित कर दिया। यह जानते हुए कि जन्म से अंधे व्यक्ति का उपचार उनके अपने मानकों के अनुसार एक मसीहाई चमत्कार था, वे किसी भी तरह से उसकी गवाही को बदनाम करने की कोशिश करते रहे। इसलिए, उन्होंने रणनीति बदली और उस व्यक्ति को अपने निष्कर्ष से सहमत करने के लिए मनाने की कोशिश की कि इस धोखे के पीछे वास्तव में यीशु थे। उन्होंने कहा, “सच्चाई बोलकर परमेश्वर की महिमा करो।” “हम जानते हैं कि यह आदमी पापी है।” यह आश्चर्यजनक है कि कैसे पूरी पूछताछ के दौरान एक बार अंधा व्यक्ति इज़राइल के महान शिक्षकों के सामने खुद को इतनी सरलता, निष्पक्षता और प्रभावशाली स्थिरता के साथ व्यक्त करता है। वह तथ्यों की ओर लौटता रहा और बोला:

Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 9

वह पापी है या नहीं, मैं नहीं जानता। लेकिन एक बात मैं जानता हूं. मैं अंधा था, परन्तु अब देखता हूँ (योचनन ९:२४-२५)। उनका बयान सिर्फ तथ्य का बयान नहीं था; यह फरीसियों के लिए एक चुनौती थी, जिसका उन्हें जवाब देना था। वह उनसे जो कह रहा था वह यह था, “मैं एक ऐसा आदमी था जो अंधा पैदा हुआ था, न कि केवल एक आदमी जो अंधा हो गया था। आप ही हैं जिन्होंने मुझे सिखाया कि केवल मसीहा ही मेरे जैसे किसी को ठीक कर सकेगा। खैर, येशुआ नाम के एक आदमी ने मुझे ठीक किया। इसलिए मुझे लगता है कि आप उसे इज़राइल का मेशियाक घोषित करना चाहेंगे। इसके बजाय आप उसे पापी कहते हैं। कृपया मुझे यह समझाएं!”

फरीसियों ने चुनौती स्वीकार की और प्रश्न पूछे: उसने आपके साथ क्या किया? उसने तुम्हारी आँखें कैसे खोलीं? वह आदमी पहले ही उन्हें एक से अधिक बार समझा चुका था, इसलिए उन्होंने जवाब देते हुए कहा: मैंने तुम्हें पहले ही बताया था और तुमने नहीं सुना। आप इसे दोबारा क्यों सुनना चाहते हैं? क्या आप भी उनके शिष्य बनना चाहते हैं? अब वे क्रोधित थे। लेकिन वे जितने अधिक विरोधी होते गए, उसे उतना ही अधिक विश्वास हो गया कि येशुआ ईश्वर की ओर से था। उन्होंने उसी प्रकार उत्तर दिया और उसका अपमान किया। वे उसका उपहास करने लगे: तुम इस व्यक्ति के शिष्य हो! परन्तु हम तो मूसा के चेले हैं! हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बात की थी, लेकिन जहां तक इस व्यक्ति का सवाल है, हम यह भी नहीं जानते कि वह कहां से आता है। तात्पर्य यह था कि ईश्वर ने यीशु से बात नहीं की थी, इसलिए मूसा का शिष्य होना येशुआ का शिष्य होने से कहीं बेहतर था। लेकिन वह आदमी चुप नहीं बैठेगा । उन्होंने उत्तर देना जारी रखा: अब यह उल्लेखनीय है! तुम नहीं जानते कि वह कहाँ से आया, फिर भी उसने मेरी आँखें खोल दीं। वह उन्हें उनके अपने धर्मशास्त्र की याद दिलाता रहा। हम जानते हैं कि ईश्वर पापियों की नहीं सुनता। वह उस धर्मात्मा व्यक्ति की सुनता है जो उसकी इच्छा पूरी करता है। किसी ने भी जन्म से अंधे आदमी की आंखें खोलने की बात कभी नहीं सुनी। यह बिना किसी समानता वाली घटना थी। मानव इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ था। यदि यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ नहीं कर सकता (यूहन्ना ९:२८-३३)।

जो लोग अंधे हो गए थे उनके ठीक होने के रिकॉर्ड हैं, लेकिन किसी ऐसे व्यक्ति का रिकॉर्ड नहीं है जो अंधा पैदा हुआ हो। यह यशायाह ३५:५ से एक मसीहाई चमत्कार था, और यह पूरे मानव इतिहास में पहली बार किया गया था। उस व्यक्ति ने फरीसियों से बस इतना कहा कि उनके पास यीशु के मसीहापन को अस्वीकार करने का कोई आधार या आधार नहीं है। कहने को कुछ न होने पर, यहूदी धार्मिक नेताओं ने उपहास करना शुरू कर दिया और कहा: आप जन्म के समय पाप में डूबे हुए थे; आपकी हमें व्याख्यान देने की हिम्मत कैसे हुई! और उन्होंने अपनी धमकी पूरी करते हुए उसे बाहर निकाल दिया (यूहन्ना ९:३४)। वह बाइबल में मसीहा की खातिर मंदिर से बाहर निकाले जाने वाले पहले व्यक्ति बन गए। वहां वह बिल्कुल अकेले में निराश्रित खड़ा था।

जब यीशु ने सुना कि उन्होंने उसे बाहर फेंक दिया है, तो महान चरवाहा गया और उसे

Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 10

पाया (यूहन्ना ९:३५ए)। मसीहा ने उसकी तलाश की, उसने चंगा होने या बचाये जाने की माँग नहीं की। यह ईश्वरीय संप्रभुता को दर्शाता है। मुक्ति इसलिए होती है क्योंकि ईश्वर पहले पापियों का पीछा करता है, इसलिए नहीं कि हम उसकी तलाश करते हैं। हम पाप की झील के तल पर आध्यात्मिक रूप से मर चुके हैं। हमारे पास कोई आध्यात्मिक नाड़ी नहीं है और हम आध्यात्मिक रूप से अनुत्तरदायी हैं। इसका अंत यही होता यदि प्रभु ने अपने पुत्र को न भेजा होता, परन्तु मनुष्य का पुत्र खोए हुए को ढूंढ़ने और बचाने आया (लूका १९:१०)। मुक्ति की प्रक्रिया में हम जो एकमात्र चीज़ जोड़ते हैं, वह है विश्वास, और ईश्वर उसे प्रदान भी करता है: क्योंकि अनुग्रह से ही आप बच गए हैं, विश्वास के माध्यम से – और यह आपकी ओर से नहीं है, यह ईश्वर का उपहार है – कर्मों से नहीं, इसलिए जिस पर कोई घमंड नहीं कर सकता (इफिसियों २:८-९)। यदि मुक्ति वास्तव में ईश्वर का कार्य है, तो इसमें कोई त्रुटि नहीं हो सकती। यह किसी व्यक्ति के व्यवहार को बदलने में असफल नहीं हो सकता। इसका परिणाम निष्फल जीवन नहीं हो सकता। जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे मसीह यीशु के दिन तक पूरा करेगा (फिलिप्पियों १:६)।

उस समय तक, उसका हृदय प्रभु के निमंत्रण के लिए तैयार हो चुका था। यह मनुष्य के लिए उस प्रक्रिया का चरमोत्कर्ष है जो पूरे अध्याय में चल रही है। हालाँकि वह अभी तक नहीं जानता था कि मसीह कौन था, फिर भी वह पूरी तरह से उसके प्रति समर्पित था। मसीहा ने उससे पूछा: क्या आप मनुष्य के पुत्र में विश्वास करते हैं (देखें En– मसीहा के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)? भिखारी इच्छुक और उत्तरदायी था। “वह कौन है सर?” आदमी ने पूछा. “मुझे बताओ ताकि मैं उस पर विश्वास कर सकूं।” तब यहोवा ने कहा, तू ने अब उसे देखा है; वास्तव में, वही आपसे बात कर रहा है। विश्वास के प्रति मनुष्य की सरल प्रतिक्रिया ज्ञानवर्धक है। तब उस मनुष्य ने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं (योचनन ९:३५बी-३८)। उन्होंने कोई संकोच नहीं किया। उन्होंने सबूत नहीं मांगा। मसीहा ने उसकी आध्यात्मिक आँखों को दृष्टि दी थी और जैसे ही वे खुलीं, उसने यीशु को देखा और विश्वास में उसके प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की। वह गरीब, अंधा भिखारी, जिसने अपने जीवन में कभी कुछ नहीं देखा था, परमेश्वर के पुत्र को स्पष्ट रूप से पहचान गया। इस बीच धार्मिक नेता जो सोचते थे कि वे सब कुछ जानते हैं, वे अपने मसीहा को भी नहीं पहचान सके। आध्यात्मिक दृष्टि ईश्वर का उपहार है जो व्यक्ति को इच्छुक और विश्वास करने में सक्षम बनाती है।

इस आदमी ने अपनी विश्वास की नई खुली आँखों से सबसे पहले क्या देखा? उसने मसीह को संप्रभु प्रभु के रूप में देखा और उसकी पूजा की। गॉस्पेल में यह एकमात्र स्थान है जहां किसी को यीशु की पूजा करने के लिए कहा जाता है। उसने कहा: मैं न्याय करने के लिये इस जगत में आया हूं, कि अन्धे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएं (योचनन ९:३८बी-३९)। हम इस कथन को यूहन्ना ३:१७ के साथ कैसे मेल कर सकते हैं, जहां येशुआ ने कहा: क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में जगत पर दोष लगाने के लिये नहीं भेजा? हालाँकि ये कथन विरोधाभासी लग सकते हैं, लेकिन ये अलग-अलग

Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 11

चीज़ों का संदर्भ देते हैं। अंतर उद्देश्य और परिणाम के बीच है। मसीह संसार को दोषी ठहराने के उद्देश्य से नहीं आये (यूहन्ना ३:१७), परन्तु उनके आने से उनके प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं के अनुसार विभाजन होता है। मसीह के आगमन का अपरिहार्य परिणाम यह है कि लोगों को उसके पक्ष या विपक्ष में निर्णय लेना होगा (देखें Dw– संकीर्ण और चौड़े द्वार)। और उनका निर्णय ही उनका भाग्य निर्धारित करता है।



जो लोग उस पर विश्वास करते थे वे देख रहे थे,
और जिन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया वे ईश्वरीय रूप से निर्धारित अंधेपन में डूब गए ताकि वे दुनिया की रोशनी न देख सकें (यूहन्ना ९:५)। कुछ समय पहले, राष्ट्र के नेताओं ने महिलाओं के दरबार में चमकदार चमकते लैंपों के नीचे धार्मिक समारोह आयोजित किए थे (देखें एनसी – महिलाओं का दरबार) जो मसीहा की ओर इशारा करते थे। हालाँकि, उन्होंने इसके आध्यात्मिक महत्व को पहचाने बिना ऐसा किया। त्योहार की रोशनी जन्म से अंधे आदमी का प्रतीक थी, दूसरी ओर, सुक्कोट रातों का अंधेरा, मसीहा के दुश्मनों की तस्वीर थी।

कुछ फरीसियों ने जो उसके साथ थे, उसे यह कहते हुए सुना और पूछा, “क्या? क्या हम भी अंधे हैं?” उन्हें नकारात्मक उत्तर की उम्मीद थी क्योंकि उन्होंने मान लिया था कि निश्चित रूप से, सभी मनुष्यों में, उनके पास आध्यात्मिक धारणा है। विरोधी लगातार लोगों को धोखा देता है ताकि वे झूठ में रहें। यीशु ने उत्तर दिया: यदि तुम अंधे होते, तो पाप के दोषी न होते; लेकिन अब जब आप दावा करते हैं कि आप देख सकते हैं, तो आपका अपराध बना रहता है (यूहन्ना ९:४०-४१; यिर्मयाह २:३५ देखें, जहां प्रभु अपने लोगों इस्राएल से लगभग समान रूप से बात करते हैं)। वे अपने पापों के लिए ज़िम्मेदार थे क्योंकि उन्होंने जानबूझकर पाप किया था। फिरौन की तरह, उन्होंने एडोनाई को अस्वीकार करके अपना भाग्य स्वयं चुना। लेकिन इसके बारे में कोई गलती न करें; झूठ का पिता (योचनान ८:४४) अंधा करने में योगदान देता है (दूसरा कुरिन्थियों ४:४)।

यशायाह ने लिखा था कि जब मसीहा आएगा, तो अंधों की आंखें खुल जाएंगी (यशायाह ३५:५)। तीसरा मसीहाई चमत्कार जन्म से अंधे किसी भी व्यक्ति का उपचार था। रब्बियों ने सिखाया कि ईश्वर द्वारा सशक्त कोई भी व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति को ठीक कर सकता है जो अंधा हो गया हो। लेकिन जब मसीहा आया, तो उन्होंने कहा कि वह जन्म से अंधे किसी व्यक्ति को ठीक करने में सक्षम होगा। पहले मसीहाई चमत्कार का

Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 12

परिणाम (देखें Cn– एक यहूदी कोढ़ी का उपचार) मसीह के मसीहापन की गहन जांच थी। दूसरे मसीहाई चमत्कार का परिणाम (देखें Ek– यीशु ने एक मूक बधिर को ठीक किया) यह निर्णय था कि शैतान के कब्जे के आधार पर यीशु मसीहा नहीं थे। और यहां तीसरे मसीहाई चमत्कार का परिणाम यह था कि जो कोई भी यीशु को अपना मसीहा मानता था उसे स्थायी रूप से मंदिर से बाहर कर दिया जाता था और आराधनालय से बाहर कर दिया जाता था।

कई कारणों से, कुछ लोग स्वयं को सत्य से दूर रखते हैं; और अधिकांश भाग में, वे अपने आस-पास किसी अन्य को प्रभावित किए बिना ही परिणाम भुगतते हैं। हालाँकि, जब ये लोग सत्ता के पदों पर आसीन होते हैं, तो सत्य बताने वालों को एक अप्रिय दुविधा का सामना करना पड़ता है: सत्य को दबाएँ या सत्ता के साथ मतभेद रखें। जन्म से अंधा व्यक्ति प्रभु द्वारा उसे दृष्टि देने के बाद ऐसी ही दुविधा में पड़ गया। महासभा के सदस्य चमत्कार से इनकार नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने उस व्यक्ति की गवाही को चुप कराने के लिए दबाव डाला और इस तरह येशुआ को बदनाम किया। लेकिन उस आदमी ने दबाव के आगे झुकने से इनकार कर दिया और मजबूती से खड़ा रहा। प्राधिकार द्वारा डराने-धमकाने के माध्यम से दबाव डालने पर उनकी प्रतिक्रिया एक योग्य मॉडल है जिसका पालन किया जाना चाहिए।

१. उस व्यक्ति ने निर्विवाद तथ्यों की अपील की (योचनान ९:१५, २५, ३२)। सत्ता में बैठे लोग, जो डराने-धमकाने के माध्यम से डराते हैं, वे इसकी घोषणा करने वाले व्यक्ति को दुश्मन बनाने की उम्मीद करते हैं और फिर अपने लक्ष्य को नष्ट या चुप कराकर प्रतिशोध की तलाश करते हैं। तथ्यों की अपील करने से बहस का ध्यान वापस वहीं चला जाता है जहां वह है: व्यक्तिगत राय के बजाय अवैयक्तिक निष्पक्षता। यह वास्तव में कहता है, “सच्चाई आपके लिए असली ख़तरा है, मैं नहीं।”

२. उस आदमी ने सीधे उत्तर दिया, लेकिन संक्षेप में (यूहन्ना ९:१७)। सत्य को दरकिनार करने, कमतर करने या नरम करने के प्रयासों से कभी कुछ हासिल नहीं होता। न ही सत्य के शत्रुओं का धर्म परिवर्तन करने का प्रयास किया जाता है। वास्तव में, अधिक शब्द चर्चा को व्यक्तिगत संघर्ष में बदलने का अधिक अवसर प्रदान करते हैं, जो उनका लक्ष्य है। सीधे और संक्षेप में उत्तर देने से सत्य के शत्रुओं के पास अपने लक्ष्य को नष्ट करने के लिए कम गोला-बारूद बचता है।

३. उस आदमी ने बहस करने से इनकार कर दिया (योचनान ९:२६-२७)। सत्ता में बैठे लोग, जो डरा-धमकाकर सच्चाई को चुप करा देते हैं, वे अपने लक्ष्य से तथ्यों को दोबारा दोहराने या राय दोहराने के जरिए असंगतता या संदेह पैदा करने का कोई अन्य साधन ढूंढने की उम्मीद करते हैं। बहस करने से इनकार करने से सच्चाई के दुश्मनों को बहस को व्यक्तिगत मामले में बदलने का कोई मौका नहीं मिलता है। यह वास्तव में कहता है, “आप मुझे रास्ते से या मेरे संदेश से विचलित नहीं कर सकते।”

Gt – यीशु ने एक जन्मांध व्यक्ति को चंगा किया: तीसरा मसीहाई
चमत्कार युहन्ना ९:१-४१ | 13

४. वह व्यक्ति निडर और दृढ़ निश्चयी रहा (यूहन्ना ९:३०-३३)। जैसा कि प्राचीन धर्मशास्त्रियों ने हमें सिखाया है, “सभी सत्य ईश्वर का सत्य है।” सत्य से विमुख होना ईश्वर से विमुख होना है। फिर भी डरा-धमकाकर सच्चाई को चुप कराने वाले अधिकारी अपने पीड़ितों को यह समझाने की कोशिश करते हैं कि ईश्वर की बजाय उनकी शक्ति से डरने की जरूरत है। सत्य को मजबूती से पकड़ने का संकल्प सत्य के शत्रुओं को डराने-धमकाने की शक्ति से वंचित कर देता है।

इस मुठभेड़ के अंत तक, फरीसियों ने खुद को मूर्ख बना लिया जब उनकी रणनीति कुछ भी हासिल करने में विफल रही। जब सत्य ने उन्हें हरा दिया, तो वे महासभा के सदस्य होने के नाते अपनी सामाजिक स्थिति से पीछे हट गए और फिर अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया (यूहन्ना ९:३४)। जबकि जन्म से अंधे व्यक्ति को कुछ नकारात्मक परिणाम भुगतने पड़े, उसने जितना खोया उससे कहीं अधिक पाया। एक भ्रष्ट धार्मिक संस्था से अलग होने के कारण उन्हें येशुआ हा-मेशियाच में नया जीवन प्राप्त हुआ।

हम प्रार्थना करते हैं, हे पिता, कि आप हमारा विश्वास बढ़ाएँगे। हमें अपनी महिमा के लिए उपयोग करने की आपकी क्षमता पर संदेह करने के लिए हमें क्षमा करें। केवल आप पर विश्वास करने के बजाय सबूत मांगने के लिए हमें क्षमा करें। आपके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हमारे पास जो कुछ भी है उसका उपयोग करें।